डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस० कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

का शुरुआत हुई थी। भारत मे उसकी सुविधा को देखते हुए रेग कुतिन ऐक्ट पास हुआ था। इतना ही नही बल्कि इस समय ब्रिटेन मे भी कैथोलिक को सुविधा देने के लिए बहुत से कठोर नियमों को हटा दिया गया था। लेकिन इसका काफी विरोध हुआ क्योंकि स्कॉट लैण्ड वाले भी यह सुविधा चाह रहे थे जिसे देना संभव नही था। लेकिन इसी समय अमेरिका ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी और नतीजा यह हुआ कि ईयाकु होन नामक जगह ब्रिटेन के हाथों से निकल गया जब कि ब्रिटेन सपनों मे नही सोचा था। ऐसी स्थिति मे जॉर्ज और लॉर्ड भी काफी बदनामी हुई। इतना ही नही बल्कि 1782 ई० मे लॉर्ड साहब अपने त्याग पत्र भी दे दिया। जब कि जॉर्ज साहब कभी नही यह चाहते थे। जब वह त्याग पत्र देकर जा रहे थे। बड़ी ही गंभीर मुद्रा मे जॉर्ज साहब ने कहा था कि "लॉर्ड साहब आप बात यह याद रखेगें कि आप मुझे छोड़ कर जा रहे है लेकिन मे आपको नही। दस वर्ष के बाद जॉर्ज को अपनी इच्छा का मंत्री प्राप्त हुआ था लॉर्ड नॉर्थ प्रसन्नचित और सरल प्रकृति का व्यक्ति था साथ ही वह शासन के उत्तरदायित्व राजा को सदा देने के लिए तत्पर रहता वास्तव मे उसके शासन के समय मे सत्ता तो जॉर्ज

तृतीय के समय ही हाथो मे रही जिसके लिए वह बहुत पहले से ही उत्सुक था, या हम ऐसा कह सकते है कि लॉर्ड नॉर्थ का मंत्रिमण्डल जॉर्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन के प्राकाष्ट था यही कारण है कि 1775 ई० तक जॉर्ज ने शासन की दृष्टि से सम्पूर्ण अधिकारों को उपयोग किया लेकिन 1777 ई० के बाद उसका विरोध शुरू हो गया ऐसी स्थिति मे कोई रास्ता नजर नही आता 1780 ई० मे नवीन लोकसभा को एक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमे कहा गया कि राजा की शक्ति बहुत बढ़ गई है उसे कम करना आवश्यक है। ऐसी स्थिति मे उसी समय से राजा की शक्ति के विरोध होता चला गया आर्थिक एवं संसदीय सुधारो की मांग की जाने लगी अतः व्यापार एवं बेबस होकर लॉर्ड नॉर्थ ने त्याग पत्र दे दिया

(v) सेव वोन का मंत्रीमण्डल — सोल ब्रोन के मंत्रिमण्डल काल मे वायसरल के संधि के पश्चात अमेरिका मे युद्ध को समाप्त किया गया इतना ही नही बल्कि उन्होंने लॉर्डनॉर्थ से मिलकर लोक सभा मे अपना बहुमत भी प्राप्त कर लिया सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह तो पहला अवसर था जिसमे बहुमत के अधार पर चयन करने के लिए बाद किया गया। लेकिन दूसरी बात यह भी है। यह संयुक्त मंत्रिमण्डल था इसीलिए यह बहुत दिनो तक कायम नही रह सका इसीलिए विद्वानो ने कहा है कि

The Power of the cron has in cride

is Incrise and out to be Doment.

(vi) छोटे पिट का मंत्रिमण्डल – ऐसी ही स्थिति मे इंगलैण्ड के संवैधानिक इतिहास मे 1783 ई० मे छोटा पिट मंत्रीमण्डल के पद को ग्रहण किया लेकिन जिस समय वह मंत्रिमण्डल के पद पर ~~आसीत~~ आसरित हुआ उस समय उसका काफी विरोध होता रहा लेकिन वह समय से घबराने वाला व्यक्ति नही था। उन्होने बड़े ही धैर्य एवं संहनशीलता के साथ अपना पद पर आसरित रहा। इतना ही नही ~~बल्कि~~ बलकि पिट के समय मे राजनैतिक दल बन्दीय पुनः प्रारंभ हुई और टोरी दल विलियन पिट के नेतृत्व मे काफी ~~संगठित~~ संगठित हुआ इस दलो का संघर्ष ब्रिटेन मे ~~लोक~~ जनतंत्र के लिए काफी लाभदायक हुआ साथ ही साथ पिट के समय मे कैबनेट प्रणाली काफी दृढ हुई। क्योंकि पिट ऐसा शासक था जिन्होंने बहुमतो के अधार पर ही शाशन किया।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कि च्चर्ज तृतीय के शासन काल इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास मे काफी महत्व रखता है। वैसे यह बात अलग है परिस्थति वश उसे त्याग पत्र देना पडा और वह अपना पद भार छोटे पिट को सौप दिया लेकिन परिवर्तन के इस तौर मे च्चर्ज तृतीय कम ही समय तक शासन किया लेकिन उसका शासनकाल सुधार के काल माना जायगा।

THE END

Scanned with CamScanner